प्रश्न पत्र - IV
आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
बी० ए० - भाग - 3

देकार्त की विचियां :

देकार्त की दार्शनिक प्रणाली का वर्णन उसके 'बुद्धि के निर्देश के लिए नियम" नामक ग्रन्थ में हुआ है। उसका संक्षिप्त वर्णन "प्रणाली का विमर्श" "प्राथमिक दर्शन की साधना" तथा दर्शन के तत्व-सिद्धान्त" में भी हुआ है। डेकार्ट की दार्शनिक प्रणाली को समझने से हमें मानव ज्ञान के स्वरूप को समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

देकार्त प्रभुत्व और परम्परा का सदा विरोधी रहे। वह उन्हीं बातों पर विश्वास करते जो बुद्धि ग्राह्य हों। उनकी दर्शन की दो दृढ़ धारणाएं थी जिन पर उनका अटूट विश्वास था-

प्रथम, मानवीय बुद्धि के पास यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने की अपूर्व क्षमता है।

दूसरा, मानवीय बुद्धि के पास यथार्थ ज्ञान को अयथार्थ ज्ञान से पृथक करने की कसौटी भी विद्यमान है।

डॉ रामनारायण मिश्र
एस० बी० कालेज
आरा

Scanned with CamScanner

देकार्त अपने सर्व धारणा की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि "संसार की सभी सुन्दर वस्तुओं में से सबसे सुन्दर बुद्धि का ही सबसे अधिक समान वितरण है सुन्दर बुद्धि का अर्थ अच्छे ढंग से निर्णय करने की और सत्य तथा असत्य का विवेक करने की शक्ति है यह सभी मनुष्यों में प्रकृतितः एक समान है"
इस प्रकार देकार्त बुद्धि को अत्यधिक महत्व देते हुए उसे ही एक मात्र विश्वसनीय बताते हैं।

वे बुद्धि को व्यापार बताते हैं-

प्रतिभान और निगमन।

प्रतिभान, इन्द्रियों के परिवर्तनशील साक्ष्य से अलग एवं दोषपूर्ण कल्पना विधान से उत्पन्न धारणा के विपरीत विशुद्ध एवं सावधान बुद्धि द्वारा तत्परता और सुभिन्नता से प्राप्त वह विषय है जिससे कोई सन्देह या अनिश्चितता नहीं रह जाती।

निगमन,

निगमन के विषय में कहा गया है कि यह प्रतिभान से भिन्न होता है। प्रतिभान स्वतः सिद्ध होता है किन्तु निगमन की प्रामाणिकता सिद्ध करनी होती है प्रतिभान साक्षात् और अपरोक्ष ज्ञान है।

उनके अनुसार प्रतिभान चुंकि निगमन निर्भर होता है इस लिए वह उतना ही सत्य और आकाट्य होता है जितना प्रतिभान। निगमन का अर्थ विशेष विशेष वस्तुओं/ कथनों/ अथवा विषयों के आधार पर सामान्य निष्कर्ष या कथन पर पहुँचना। उदाहरण के लिए राम मरणशील है, श्याम मरणशील है, मोहन मरणशील है, श्याम, राम, मोहन सभी मनुष्य हैं अतः सभी मनुष्य मरणशील हैं।

विचार के नियम:

देकार्त के अनुसार विचार के चार नियम हैं। इन नियमों के आधार पर ही बुद्धि किसी विषय के सन्दर्भ में विचार करती है। —

1. जिस वस्तु को प्रामाणिक रूप से सत्य नहीं जाना जा सकता उसे सत्य न मानना अर्थात सावधानी से उतावलेपन और दुराग्रह से दूर रहना तथा अपने निर्णयों में किसी ऐसी वस्तु को शामिल

न उठना जो बुद्धि के समक्ष स्पष्ट और सुभिन्न रूप से प्रकट न हो और जिस पर संशय करने की गुंजाइश न हो।

2. जिन समस्याओं का परीक्षण करना था, उनमें से प्रत्येक को उतने संभव भागों में बांटना जितने की उसके समाधान के लिए अपेक्षित थे।

3. अपने विचारों को एक क्रम में रखना। सहले उन चीजों को रखना जो मौलिक एवं सरलता से जानी जाती हैं। पुनः थोड़ा-थोड़ा उनसे अधिक अधिक क्लिष्ट विचारों को रखा जाय और अंत में सबसे क्लिष्ट विचारों को। अर्थात् किसी भी वस्तु, विचार आदि को सरलता से क्लिष्टता के क्रम में रखना।

4. प्रत्येक प्रसंग में गणन को इतना पूर्ण एवं परीक्षण को इतना व्यापक बनाना कि किसी विचार या वस्तु के छूटने की गुंजाइश ही ना रह जाये।

उपयुक्त नियम निश्चयात्मक एवं अनिवार्य ज्ञान की सर्व अपेक्षाएं हैं।

—o—

Scanned with CamScanner